सं शो वि | हिसार | 164-86 | 2105 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) मार्किट कमेटी, हिसार (2) हरियाणा, एश्रीकल्चर मार्किटींग योर्ड, पंचकुला (हरियाणा) के श्रीमक श्री सतवीर सिंह, पुत्र श्री श्रीम प्रकाण गांव छतेरा, तह । गोहाना, जिला सोनीपत तथा उसके प्रवत्थकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

क्रीर चूंकि हरियाणा के राज्याल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी अधिसूचना सं॰ 9641-1-अम/78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीम गठित श्रम व्यापालय, रोहतक को विवादशस्त या उसरे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उवत प्रवन्धकों तथा अभिक के वीच या तो विवादशस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री सतवीर सिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है.? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

संव श्रोव विव/एफव्डीव/245-86/2123.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैव गिरधर सिल्ड मिल्ज, प्लाट नंव 68, सैक्टर 27-सी, फरीदाबाद के श्रीमक श्री राम किशन, मार्फत फरीदाबाद मजदूर यूनियन, जी-162, इत्टिरा नगर, सैक्टर 7, फरीदाबद तथा उसके श्रवन्थकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वाळनीय समझते हैं .;

इसलिए, शब, श्रौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं0 5415—3-श्रभ 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं0 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, हारा उक्त श्रिधसूचना, की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे युसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिण्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो जिवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राम किशन की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० श्रो० वि०/पानी/108-86/2130 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) सचिव, हरियाणा राज्य बिजली. बोर्ड, चण्डीगढ़ (2) कार्यकारी ग्रिभियन्ता, सिस्टम इम्परवर्मेन्ट कन्सट्रकशन डिविजन, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, करनाल के श्रमिक श्री विजय सिंह मार्फत टैक्सटाईल मजदूर संघ, जी. टी. रोड़, पानीपत तथा उसके प्रबन्धकों के महय इसमें इसके बाद, लिखित मागले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है।

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस दिवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, भव, भौद्योगिक विवाद प्रिष्ठिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की भा शिवायों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रश्निस्चना सं० 3(44)84-3-धग, दिनांक 18 अप्रैल, 1944 द्वारा उकत अधिस्चना की द्वारा 7 के भ्रष्ठीक गठित अग न्यायालय, अम्बाला, को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट सीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री विजय सिंह की छटनी न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्री विव/एफ बी व / 247-86/238--- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० श्रशोका इन्हानेव सराय ख्वाजा, सैंबटर 35-37, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री श्रोम प्रकाश, पुल श्री मुन्शी राम मार्फत श्री भीम सिंह यादव 1-वंर/46-ए, एन. आई. टी. फरीदाबाद, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई वौद्योगिक विवाद है;

भीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना गांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, भौद्योगक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवसी का प्रयोग करते हुए हिन्दाणा के र उपपार हमके द्वारा सर्वारी अधिसूचना सं 5415—3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए अदिसूचन सं 11495—जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उपत अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गटित अम न्यायालय, फरीराबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेत् निविद्य करते हैं जो कि उनत प्रवन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अभवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या भी भ्रोम प्रकार की सेवाभ्रो का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह विस राहत का हकदार है ?

संव भ्रोव दिव/एप:ही./2:2- १६/2: 13.--चूमि हिन्याणा में राष्ट्रपाल की राय है कि सैव जगद्रगा इन्जिनियरिंग 18/7,डी. एल. एफ. एरिया पर्रशाबाद, में श्रीमंत्र वहादुए, मार्पत श्रीद्धल भारतीय विसान मजदूर संगठन, सराय ख्वाजा, फरीक्षाबाद तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस भें इसके बाद सिखित गामलें में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

भीर चंकि हरियाणा के र ज्यपार इस निवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की घारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों, का प्रयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यपान इस के द्वारा सरकारी अधिपूचना उंठ 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 ज्न, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना संठ 11495-ज -श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधसूचना की धारा 7 के शक्षीन गठित श्रम ग्यायालय, फरीदाबाद को विवादशस्त या उससे सुसंगत, या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु विधिष्ट वरते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकी तथा श्रमिकी के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से मुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामना है —

क्या श्री मन बहादुर की सैवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का

दिनांक 16 जनवरी, 1987

सं० भ्रो० वि०/हिसार/163-86/2804.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० (1) हरियाणा राज्न सहकारी भूमि बैंक चण्डीगढ़ लि.,। (2) प्रार्टमरी छोपरेटिव लैण्ड डिवलोपमेन्ट बैंक लि०, सिरसा के श्रीमक श्री विजयपाल सिंगर, पुत्र श्री भनी राम, गांव व डा० मोजगड, तह ील छबवाली, जिला सिरसा, तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इस में इसके बाद लिखित मामलें में कोई भौद्योगिक है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपात इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, अोद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिश्चना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उसके सम्बन्धित नीचे लिखा गामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्णिट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद में सुसंगत अथवा सम्बन्धित है :---

नया श्री विजय पाल की सेवाओं का संगापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो. वि. /एफ०डी०/188-86/2312.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० सम्बन विकास (इण्डिया) लि., प्लाट न० 65, सैक्टर 27-ए, फरीदाबाद के श्रीमक श्री गजराज सिंह पुत्र श्री नत्यु सिंह, साधु कलोनी मं. नं. 2, मैंवला महराज पुर, मथुरा रोड, फरीदाबार, तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इस में इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीधोंगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के र ज्यपाल इस विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) हारा प्रदान की गई, शिवतयों का प्रयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रिष्ठिनियम की धारा 7 क के ग्रधीन गठित ग्रौद्योगिक श्रिष्ठिकरण, हिरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिद्धित मामला जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रिमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है प्रयवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है, याय निर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं:—

वया श्री गजराज सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?